What does the Bible say about going to Church?

कलीसिया को जाने के बारे में बाईबल क्या कहती है?

कलीसिया को जाने के बारे में बाईबल क्या कहती है?

I. "जो परमेश्वर का है वह परमेश्वर की बातें सुनता है - तुम इसलिए उन्हें नहीं सुनते क्योंकि तुम परमेश्वर के नहीं हो।" - यूहन्ना 8 : 47

II. जब लोगों ने मुझ से कहा, "आओ, हम यहोवा के भवन के चलें," तब मैं आनन्दित हुआ।" - भजन संहिता 122 : 1

III. "क्या ही धन्य है वे जो तेरे भवन में निवास करते हैं। वे निरन्तर तेरी स्तुति-प्रशंसा करते रहते हैं।" - भजन संहिता 84 : 4

IV. "जो वचन को तुच्छ जानता है वह इसका मूल्य चुकाता है, परन्तु जो आज्ञा का आदर करता है, वह प्रतिफल पाता है। - नीतिवचन 13 : 13

I. बाईबल बताती है कि परमेश्वर का वचन को सुनने के लिए और सीखने के लिए चाहत है, यही सही मसीही का एक पहचान है।

"जो परमेश्वर का है वह परमेस्वर की बातें सुनता है - तुम इसलिए उन्हें नहीं सुनते क्योंकि तुम परमेश्वर के नहीं हो।" - यूहन्ना 8 : 47

"तब यीशु उन यहूदियों से जिन्होंने उस पर विश्वास किया था, कहने लगा, "यदि तुम मेरे वचन में बने रहोगे, तो सचमुच मेरे चेले ठहरोगे।" - यूहन्ना 8 : 31

"ये लोग थिस्सलुनीके वालों से अधिक सज्जन थे, क्योंकि उन्होंने बड़ी उत्सुकता से वचन को ग्रहण किया और प्रतिदिन पवित्रशास्त्रों में से खोज-बीन करते रहे कि देखें ये बातें ऐसी ही हैं या नहीं।" - प्रेरितों के काम 17 : 11

"तेरे मुंह की व्यवस्था मेरे लिए सोने और चांदी के हज़ारों सिक्कों से भी उत्तम है।" - भजन संहिता 119 : 72

"इस कारण हम भी सर्वदा परमेश्वर का धन्यवाद करते हैं कि जब हमारे द्वारा तुम्हें परमेश्वर के वचन का सन्देश मिला, तो तुमने उसे मनुष्यों का नहीं,परन्तु परमेश्वर

का वचन समझ कर ग्रहण किया – सचमुच वह है भी – जो तुम विश्वासियों में अपना कार्य भी करता है। " – 1 थिस्सलुनीकियों 2 : 13

"परन्तु वह तो यहोवा की व्यवस्था से आनन्दित होता और उसकी व्यवस्था पर रात-दिन मनन करता रहता है।" – भजन संहिता 1 : 2

II. बाईबल कहती है उस चाहत का पूरा कलीसिया की आराधना के समय में ही किया जा सकता है।

जब लोगों ने मुझ से कहा, "आओ, हम यहोवा के भवन को चलें," तब मैं आनन्दित हुआ।" – भजन संहिता 122 : 1

"और लगातार मन्दिर में जाकर परमेश्वर की स्तुति करते रहे।" – लूका 24 : 53

"और वे प्रेरितों से लगातार शिक्षा पाने, संगति रखने, रोटी तोड़ने, और प्रार्थना करने में लवलीन रहे।" – प्रेरितों के काम 2 : 42

"वे एक मन होकर दिन-प्रतिदिन मन्दिर में जाते और घर घर रोटी तोड़ते हुए आनन्द और मन की सीधाई से एक साथ भोजन किया करते थे।" – प्रेरितों के काम 2 : 46

"और एक दूसरे के साथ इकट्ठा होना न छोड़ो, जैसा कि कितनों की रीति है, वरन् एक दूसरे को प्रोत्साहित करते रहो, औरउस दिन को निकट आते देख कर और भी अधिक इन बातों को किया करो।" – इब्रानियों 10 : 25

"हे यहोवा, मैं तेरे निवासस्थान से – उस स्तान से जहाँ तेरी महिमा वास करती है – प्रीति रखता हूँ।" – भजन संहिता 26 : 8

"मसीह के वचन को अपने हृदयों में बहुतायत से बसने दो, समस्त शान सहित एक दूसरे को शिक्षा और चेतावनी दो, अपने हृदयों में धन्यवाद के साथ परमेश्वर के लिए भजन और स्तुतिगान औरआत्मिक गीत गाओ।" – कलूसियो 3 : 16

"पर वह उनके बीच में से निकल कर चल दिया। अब वह गलील के एक नगर कफरनहूम में आया और सब्त के दिनों में लोगों को उपदेश देता था।" – लूका 4 : 30-31

"फिर वह नासरत आया वहां उसका पालन-पोषण हुआ था और अपनी रीति के अनुसार सब्त के दिन आराधनालय में जाकर पढ़ने के लिए खड़ा हुआ।" – लूका 4 : 16

"मैं तो तुम्हारे साथ प्रतिदिन मन्दिर में उपदेश दिया करता था और तुमने मुझे नहीं पकड़ा, परन्तु, यह इसलिए हुआ कि पवित्रशास्त्र का लेख पूरा हो।" – मरकुस 14 : 49

"धन्यवाद करते हुए उसके सम्मुख आएं, और भजन गाते हुए उसका जयजयकार करें।" – भजन संहिता 95 : 2

"मैंने यहोवा से एक वर मांगा है, मैं उसी के यत्न में लगा रहूँगा : कि मैं अपने जीवन भर यहोवा के भवन में ही निवास करने पाऊँ, जिस से यहोवा की मनोहरता निहारता रहूँ और उसके मंदिर में उसका ध्यान करता रहूँ।" – भजन संहिता 27 : 4

"मेरा प्राण यहोवा के आंगनों की अभिलाषा करते करते मूर्छित हो चला; मेरा हृदय और मेरा शरीर जीवते परमेश्वर के लिए आनन्द से गाते हैं।" – भजन संहिता 84 : 2

III. बाईबल उन तमाम आशिषों को दिखाती है जो परमेश्वर का वचन का सुनने से और सीखने के द्वारा मिलती है।

"क्या ही धन्य हैं वे जो तेरे भवन में निवास करते हैं। वे निरन्तर तेरी स्तुति-प्रशंसा करते रहते हैं।" – भजन संहिता 84 : 4

नया जन्म का अनुभव : "क्योंकि तुमने नाशमान नहीं वरन् अविनासी बीज से, अर्थात् परमेश्वर के जीवित तथा अटल वचन द्वारा, नया जन्म प्राप्त किया है।" -- 1 पतरस 1 : 23

उद्धार का अनुभव : "इसलिए सारी मलिनता तथा समस्त दुष्टता को दूर करके उस वचन को नम्रतापूर्वक ग्रहण कर लो जो तुम में बोया गया है औरजो तुम्हारे प्राणों को बचा सकता है।" – याकूब 1 : 21

"वह तुझे ऐसी बातें बताएगा जिनके द्वारातू और तेरा सारा घराना उद्धार पाएगा।" – प्रेरितों का काम 11 : 14

पवित्रीकरण : "सत्य के द्वारा उन्हें पवित्र कर तेरा वचन सत्य है।" – यूहन्ना 17 : 17

पवित्रआत्मा : "मैं तुम से केवल इतना ही जानना चाहता हूँ कि तुम ने आत्मा को क्या व्यवस्था के कामों से पाया, अथवा सुसमाचार को विश्वास सहित सुनने से?" – गलातियों 3 : 2

विश्वास : "अतः विश्वास सुनने से, और सुनना मसीह के वचन के द्वारा होता है।" – रोमियों 10 : 17

अनन्त जीवन : "मेरी भेड़ें मेरी आवाज़ सुनती हैं। मैं उन्हें जानता हूँ, और वे मेरे पीछे पीछे चलती हैं। मैं उन्हें अनन्त जीवन देता हूँ। वे कभी नाश न होंगी, और उन्हें मेरे हाथों से कोई भी छीन नहीं सकता।" – यूहन्ना 10 : 27-28

"मैं तुमसे सच सच कहता हूँ, जो मेरा वचन सुनकर मेरे भेजने वाले पर विश्वास करता है, अनन्त जीवन उसका है, और उस पर दण्ड की आज्ञा नीहं होती, पर मृत्यु से पार होकर वह जीवन में प्रवेश कर चुका है।" – यूहन्ना 5 : 24, "तुम पवित्रशास्त्रों में ढूँढते हो क्योंकि तुम सोचते हो कि उनमें अनन्त जीवन मिलता है, और ये वे ही हैं जो मेरे विषय में साक्षी देते हैं।" – यूहन्ना 5 : 39

सत्य और सतत्रता : "तब यीशु उन यहूदियों से जिन्होंने उस पर विश्वास किया था, कहने लगा, "यदि तुम मेरे वचन में बने रहोगे, तो सचमुच मेरे चेले ठहरोगे, और तुम सत्य को जानोगे और सत्य तुमको स्वतंत्र करेगा।" – यूहन्ना 8 : 31-32

अन्य भौतिक आशिषें : "परन्तु तुम पहले परमेस्वर के राज्य और उसकी धार्मिकता की खोज में लगे रहो तो ये सब वस्तुएं तुम्हें दे दी जाएंगी।" – मत्ती 6 : 33

मुख्य विषय : "और बचपन ही से पवित्रशास्त्र तेरा जाना हुआ है जो मसीह यीशु में विश्वास के द्वारा तुझे उद्धार पाने के लिए बुद्धि दे सकता है। सम्पूर्ण पवित्रशास्त्र परमेश्वर की प्रेरणा से रचा गया है और शिक्षा, ताड़ना, सुधार और धार्मिकता की शिक्षा के लिए उपयोगी है, जिससे कि परमेश्वर का भक्त प्रत्येक भले कार्य के लिए कुशल और तत्पर हो जाए।" – (सारांश) 2 तीमुथियुस 3 : 15-17

IV. बाईबल उन सबको चेतावनी देती है, जो परमेश्वर का वचन का सुनते नही है और मानती नही है।

"जो परमेश्वर का है वह परमेश्वर की बातें सुनता है – तुम इसलिए उन्हें नहीं सुनते क्योंकि तुम परमेश्वर के नहीं हो।" – यूहन्ना 8 : 47

"क्योंकि वहहमारा परमेश्वर है, और हम उसकी चरागाह की प्रजा, और उसके हाथ की भेड़ें हैं। यदि आज तुम उसकी आवाज़ सुनो, तो अपने हृदय को ऐसा कटोर न करो जैसा मरीबा में व मस्सा के दिन जंगल में किया था, जब तुम्हारे पूर्वजों ने मुझे परखा। यद्यपि उन्होंने मेरे कार्यों को देखा था, फिर भी उन्होंने मुजे जांचा। चालीस वर्ष तक मैं उस पीढ़ी के प्रति उदासीन रहा, और मैंने कहा, "ये लोग भटकने वाले मन के हैं, और वे मेरे मार्गों को नहीं पहचानते। इस कारण मैंने क्रोधित होकर शपथ खाई कि निश्चय, ये मेरे विश्वास में प्रवेश न करने पाएँगे।" – भजन संहिता 95 : 7-11

प्रभु यहोवा की यह वाणी है "देखो, ऐसे दिन आनेवाले है जबकि मैं इस देश में अकाल भेजूंगा। यहअकाल रोटी या पानी का नहीं वरन् यहोवा के वचन सुनने का होगा।" – अमोस 8 : 11

"वह जो तुम्हारी सुनता है, मेरी सुनता है। और जो तुम्हें अस्वीकार करता है, वह उसे अस्वीकार करता है जिसने मुझे भेजा है।" – लूका 10 : 16

"जो वचन को तुच्छ जानता है वह इसका मूल्य चुकाता है, परन्तु जो आज्ञा का आदर करताहै, वह प्रतिफल पाता है।" – नीतिवचन 13 : 13

"अज्ञानता के कारण मेरी प्रजा नाशहो जाती है। इसलिए कि तूने ज्ञान को अस्वीकार किया है, मैं भी तुझे अपना याजक होने से अस्वीकार कर दूँगा। इसलिए कि तू अपने परमेश्वर की व्यवस्था को भूल गया है, मैं भी तेरी सन्तान को भूल जाऊँगा।" – होशे 4 : 6

"भोज तैयार होने पर उसने अपने दास को आमन्त्रित लोगों से यह कहने भेजा : "आओ, सब कुछ तैयार हो गया है।" परन्तु वे सब के सब क्षमा मांगने लगे। परिले ने उस से कहा "मैंने एक खेत मोल लिया है, अतः जाकर उसे देखना आवश्यक है; कृपा कर के मुझे क्षमा कर दे।" दूसरे ने कहा, "मैंने पांच जोड़ी बैल मोल लिए हैं, मुझे उनको परखने जाना है; कृपा करके मुझे क्षमा कर दे।" फिर एक और ने कहा, "मैंने ब्याह किया है, अतः मैं नहीं जा सकता।" दास ने आकर अपने स्वामी को ये बातें बताई। तब गृह-स्वामी ने क्रुद्ध होकर दास से कहा, "शहर के गली-कूचों में जकर शीघ्र कंगालों, टुण्डों, अंधों और लंगड़ों को यहाँ ले आ।" दास ने फिर कहा, "स्वामी, तेरी आज्ञा के अनुसार किया गया पर अभी भी स्थान बचा है। तब स्वामी ने कहा, "राजमार्गों और बाड़ों की ओर जाकर लोगों को आने के लिए विवश कर कि मेरा घर भर जाए। क्योंकि मैं तुमसे कहता हूँ कि जो आमन्त्रित किए गए थे, उनमें से कोई भी मेरे भोज को नहीं चखेगा।" – लूका 14 : 17-24

"हे यरूशलेम, हे यरूशलेम! तू नबियों को मार डालता है और जो तेरे पास भेजे जाते हैं, उनका पथराव करता है। मैंने कितनी बार चाहा कि जैसे मुर्गी बच्चों को अपने पंखों के नीचे इकट्ठा करती है, वैसे हीमैं भी तेरे बच्चों को इकट्ठा करूं, पन्तु तुम ने न चाहा। देखो, तुम्हारा घर तुम्हारे लिए उजाड़ छोड़ा जाता है।" – मत्ती 23 : 37-38

जब वह निकट पहुँचा तो नगर को देख कर उस पर रोया और कहा, "यदि आज के दिन तू, हां तू ही, उन बातों को जानता जो शान्ति की है – परन्तु अब वे तेरी आँखों से छिप गई है।" – लूका 19 : 41-42

हे परमेश्वर पिता, हमारे सीखने केलिए समस्त पवित्र शास्त्र तूने हमको दिया है उस के लिए हम तेरा धन्यवाद करते हैं। हमें अनुग्रह दे कि हम तेरा वचन को सही तरीका से पढ सके; सुन सकें, और उनके अनुसार तेरा आज्ञाकारी बन सकें। तेरा वचन में हम दृढ़ विश्वास करे और तूने जो अनन्त जीवन अपनी पुत्र हमारी यीशु मसीह के द्वारा और उनका नाम से देने का प्रतिज्ञा हमको दी है, हम उसे पाने का योग्य बन सकें। हमारे प्रभु यीशु मसीह का नाम से हम प्रार्थना करते हैं।

आमीन

जिसके कान हों, वह सुन ले कि आत्मा कलीसियाओं से क्या कहता है।– प्रकाशितवाक्य 2 : 29